8 सोहनलाल द्विवेदी

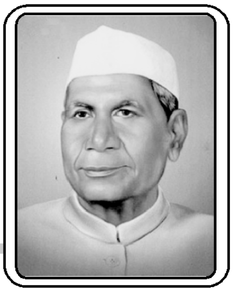

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—22 फरवरी, 1906 ई०।
- **जन्म-स्थान**—बिन्दकी (फतेहपुर), उ०प्र०।
- **मृत्यु**—29 फरवरी, 1988 ई०।
- **भाषा**—खड़ीबोली।
- **सम्पादन**—'अधिकार' और 'बालसखा'।

जीवन-परिचय—सोहनलाल द्विवेदी का जन्म सन् 1906 ई० में फतेहपुर जिले के बिन्दकी नामक कस्बे में हुआ था। द्विवेदीजी का परिवार सम्पन्न था, अतः इनकी शिक्षा की व्यवस्था बचपन से ही अच्छी थी।

हाईस्कूल तक की शिक्षा फतेहपुर में हुई। उच्च शिक्षा के लिए यह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी गये। वहीं से इन्होंने एम० ए० और एल० एल० बी० की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। हिन्दी के सुयोग्य अध्यापक पं० बलदेवप्रसाद शुक्ल से इन्हें साहित्यिक संस्कार प्राप्त हुए। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में ये मदनमोहन मालवीय के सम्पर्क में आये। इनके मन में देश-प्रेम की भावना दृढ़ हुई। महात्मा गाँधी की विचारधारा से यह परिचित हुए। स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और जेल भी गये। सन् 1938 से 1942 ई० तक दैनिक राष्ट्रीय पत्र 'अधिकार' का लखनऊ से सम्पादन करते रहे। कुछ वर्षों तक 'बालसखा' के अवैतनिक सम्पादक भी रहे। स्वतन्त्रता के बाद गाँधीवाद की मशाल जलाये रखने वाले इस कवियोद्धा का निधन 29 फरवरी, सन् 1988 ई० को हुआ।

साहित्यिक सेवाएँ—द्विवेदीजी ने किसानों की दशा, खादी का प्रचार, ग्रामोद्योग की उन्नति आदि विषयों को लेकर अपने गीतों की रचना की है। अपनी कविताओं के माध्यम से इन्होंने देश के नवयुवकों में अभूतपूर्व उत्साह एवं देश-प्रेम की भावना का संचार किया। इनकी बाल-कविताएँ भी नवीन उत्साह और जागरण का मन्त्र फूँकने वाली हैं। सन् 1941 ई० में इनका प्रथम काव्य-संग्रह 'भैरवी' प्रकाशित हुआ। इसके बाद द्विवेदीजी निरन्तर साहित्य-साधना में लगे रहे। बालकों को प्रेरित करने के उद्देश्य से भी इन्होंने श्रेष्ठ साहित्य का सृजन किया।

रचनाएँ—द्विवेदीजी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

(1) कविता संग्रह—'भैरवी', 'पूजा गीत', 'चेतना', 'प्रभाती' आदि। इनमें राष्ट्रीयता, समाज-सुधार एवं मानवोत्थान का आह्वान करने वाली कविताएँ संकलित हैं।

(2) बाल कविता संग्रह—'शिशु भारती', 'दूध बतासा', 'बाल भारती', 'बिगुल', 'बाँसुरी', 'झरना' तथा 'बच्चों के बापू' द्विवेदीजी के बाल-कविता संग्रह हैं।

(3) प्रेमगीत संग्रह—'वासन्ती' द्विवेदीजी का प्रेम के गीतों का संग्रह है, जिसमें प्रेम के उदात्त रूप की सरस अभिव्यक्ति हुई है।

(4) आख्यान काव्य—'विषपान', 'वासवदत्ता', 'कुणाल' द्विवेदीजी के प्रसिद्ध प्रबन्ध आख्यान काव्य हैं। इनमें इतिहास तथा कल्पना का अद्भुत समन्वय है।

भाषा-शैली—द्विवेदीजी की भाषा सरल, परिष्कृत खड़ीबोली है। कहीं-कहीं पर संस्कृत शब्दों का तत्सम रूप में प्रयोग किया गया है। भाषा में व्यावहारिक शब्दों तथा मुहावरों का अनेक स्थलों पर प्रयोग कवि ने किया है। कुछ स्थानों पर उर्दू भाषा के प्रचलित शब्दों के प्रयोग भी देखने को मिलते हैं। इन्होंने प्रबन्ध एवं मुक्तक दोनों ही शैलियों में काव्य-रचना की है।

♦

उन्हें प्रणाम

भेद गया है दीन-अश्रु से जिनका मर्म,
मुहताजों के साथ न जिनको आती शर्म,
किसी देश में किसी वेश में करते कर्म,
मानवता का संस्थापन ही है जिनका धर्म।
ज्ञात नहीं है जिनके नाम।
उन्हें प्रणाम! सतत प्रणाम!

कोटि-कोटि नंगों, भिखमंगों के जो साथ,
खड़े हुए हैं कंधा जोड़े, उन्नत माथ,
शोषित जन के, पीड़ित जन के, कर को थाम,
बढ़े जा रहे उधर जिधर है मुक्ति प्रकाम!
ज्ञात और अज्ञात मात्र ही जिनके नाम!
वन्दनीय उन सत्पुरुषों को सतत प्रणाम!

जिनके गीतों के पढ़ने से मिलती शान्ति,
जिनकी तानों के सुनने से झिलती भ्रान्ति,
छा जाती मुखमण्डल पर यौवन की कान्ति,
जिनकी टेकों पर टिकने से टिकती क्रान्ति।

मरण मधुर बन जाता है जैसे वरदान,
अधरों पर खिल जाती है मादक मुस्कान,
नहीं देख सकते जग में अन्याय वितान,
प्राण उच्छ्वसित होते, होने को बलिदान।

जो घावों पर मरहम का कर देते काम!
उन सहृदय हृदयों को मेरे कोटि प्रणाम!

उन्हें जिन्हें है नहीं जगत में अपना काम,
राजा से बन गये भिखारी तज आराम,
दर-दर भीख माँगते सहते वर्षा घाम
दो सूखी मधुकरियाँ दे देतीं विश्राम!

जिनकी आत्मा सदा सत्य का करती शोध,
जिनको है अपनी गौरव गरिमा का बोध,
जिन्हें दुखी पर दया, क्रूर पर आता क्रोध
अत्याचारों का अभीष्ट जिनको प्रतिशोध!
उन्हें प्रणाम! सतत प्रणाम!

जो निर्धन के धन निर्बल के बल अविराम!
उन नेताओं के चरणों में कोटि प्रणाम।

मातृभूमि का जगा जिन्हें ऐसा अनुराग!
यौवन में ही लिया जिन्होंने है वैराग,
नगर-नगर की ग्राम-ग्राम की छानी धूल
समझे जिससे सोई जनता अपनी भूल!
जिनको रोटी नमक न होता कभी नसीब,
जिनको युग ने बना रखा है सदा गरीब,
उन मूर्खों को विद्वानों को जो दिन-रात,
इन्हें जगाने को फेरी देते हैं प्रात;
जगा रहे जो सोए गौरव को अभिराम।

उस स्वदेश के स्वाभिमान को कोटि प्रणाम!
जंजीरों में कसे हुए सीकचों के पार
जन्मभूमि जननी की करते जय-जयकार
सही कठिन, हथकड़ियों की बेतों की मार
आजादी की कभी न छोड़ी टेक पुकार!

स्वार्थ, लोभ, यश कभी सका है जिन्हें न जीत
जो अपनी धुन के मतवाले मन के मीत
ढाने को साम्राज्यवाद की दृढ़ दीवार
बार-बार बलिदान चढ़े प्राणों को वार!

बंद सीकचों में जो हैं अपने सरनाम
धीर, वीर उन सत्पुरुषों को कोटि प्रणाम!
उन्हीं कर्मठों, ध्रुव धीरों को है प्रतियाम!
कोटि प्रणाम!
जो फाँसी के तख्तों पर जाते हैं झूम,
जो हँसते-हँसते शूली को लेते चूम,
दीवारों में चुन जाते हैं जो मासूम,
टेक न तजते, पी जाते हैं विष का धूम!

उस आगत को जो कि अनागत दिव्य भविष्य
जिनकी पावन ज्वाला में सब पाप हविष्य!
सब स्वतन्त्र, सब सुखी जहाँ पर सुख विश्राम
नवयुग के उस नव प्रभात की किरण ललाम।

उस मंगलमय दिन को मेरे कोटि प्रणाम!
सर्वोदय हँस रहा जहाँ, सुख-शान्ति प्रकाम!

('जय भारत जय' से)

अभ्यास प्रश्न

• विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्यगत सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—

(अ) भेद गया·······························सतत प्रणाम!

(ब) कोटि-कोटि·······························सतत प्रणाम!

(स) जो घावों·······························देतीं विश्राम!

(द) मातृभूमि का······························ अपनी भूल!

(य) उस आगत·······························शान्ति प्रकाम!

2. सोहनलाल द्विवेदी की जीवनी एवं रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा सोहनलाल द्विवेदी की साहित्यिक विशेषताएँ एवं भाषा-शैली का उल्लेख कीजिए।

अथवा सोहनलाल द्विवेदी की रचनाओं एवं भाषा-शैली का उल्लेख कीजिए।

3. 'उन्हें प्रणाम' कविता का सारांश लिखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'उन्हें प्रणाम' कविता के आधार पर लिखिए कि कवि ने किन-किन को प्रणाम करने की बात कही है?
2. क्रान्ति के आश्रयदाताओं के कौन-कौन से लक्षण बताये गये हैं।
3. 'उन्हें प्रणाम' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।
4. कवि ने स्वदेश का स्वाभिमान किसे कहा है?
5. कवि किस मंगलमय दिन को अपना प्रणाम अर्पित करता है?
6. देशभक्त किस उद्देश्य से नगर-नगर तथा ग्राम-ग्राम धूल चाटते हैं?

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. सोहनलाल द्विवेदी की दो रचनाओं के नाम लिखिए।
2. द्विवेदीजी ने किन पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया?
3. किसी एक गाँधीवादी कवि का नाम लिखिए।
4. कवि की दृष्टि में वन्दनीय पुरुष कौन-से हैं?
5. राष्ट्र-निर्माता को कवि ने क्या कहा है?
6. निम्नलिखित में से सही वाक्य के सम्मुख **सही** (✓) का चिह्न लगाइये—

   (अ) कवि कर्मठ वीरों को प्रणाम करता है। ( )

   (ब) द्विवेदीजी की भाषा खड़ीबोली है। ( )

   (स) कवि परतन्त्रता के दिन को प्रणाम करता है। ( )

काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

   (अ) नगर-नगर की ग्राम-ग्राम की छानी धूल।

   (ब) ढाने को साम्राज्यवाद की दृढ़ दीवार।

   (स) नव युग के उस नव प्रभात की किरण ललाम।
2. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद करते हुए सन्धि का नाम लिखिए—

   स्वाभिमान, सर्वोदय।
3. निम्नलिखित शब्द-युग्मों से विशेषण-विशेष्य अलग कीजिए—

   मरण मधुर, मादक मुस्कान, दृढ़ दीवार, बन्द सीकचे।

आन्तरिक मूल्यांकन

(1) आप विचार करके लिखिए कि 'उन्हें प्रणाम' शीर्षक के स्थान पर दूसरा शीर्षक क्या हो सकता है?

(2) देश-प्रेम पर आधारित कविताओं की एक सूची तैयार कीजिए।

♦